V. AYURVEDA SERIES
28

BHĀVAPRAKĀSA NIGHANTU

(INDIAN MATERIA MEDICA)

OF

ŚRĪ BHĀVAMIŚRA

(c. 1600-1600 A.D.)

Commentary by

Dr. K. C. CHUNEKAR, A.M.S.

Ex-Lecturer, Department of Dravyaguṇa,

Institute of Medical Sciences, B.H.U., Varanasi

Edited by

Dr. G. S. PANDEY, A.M.S.

Ex-Lecturer, Ayurveda Department, College of Medical,

Sciences and Physician, S.S. Hospital, B.H.U., Varanasi

CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY

Publisher and Distributor of Monumental Treatises of the East

Gokul Bhawan, K. 37/109, Gopal Mandir Lane

P.O. Box No. 1065

VARANASI-221001 (INDIA)

इसको अनेक प्रान्तों के लोग बागों में रोपण करते हैं। इसकी अन्य जातियों को भी फालसा कहा जाता है।

इसका वृक्ष-छोटा होता है। पत्ते-४-५ इञ्च लम्बे, २-२॥ इञ्च चौड़े गोलाकार एवं दंतुर होते हैं। दन्त अनियमित होते हैं तथा आधार की तरफ कुछ तिरछे होते हैं। फूल-झूमकों में पीले रंग के आते हैं। फल-मटर के समान गोल, कच्ची अवस्था में हरे रङ्ग के और पकने पर जामुनी रङ्ग के हो जाते हैं। इसका स्वाद खट्टा तथा कुछ मधुर होता है। इसका शरबत बनाकर लोग गरमी के दिनों में पीते हैं।

रासायनिक संगठन—फल में साइट्रिक अम्ल, शर्करा तथा अल्प विटामिन 'सी' होता है।

गुण और प्रयोग—इसके पके फल शीत, विष्टम्भि, पित्तशामक, हृद्य एवं तृष्णाशामक हैं।

(१) इनका उपयोग हृद्रोग, पित्तप्रकोप, ज्वर एवं दाह आदि में शरबत बनाकर करते हैं।

(२) इसके मूल की छाल आमवात में लाभप्रद मानी जाती है।

(३) पत्तों को पूय युक्त फुन्सियों पर लगाते हैं। इसके पत्तों के ईथरीय सत्व में पूयजनक जीवाणु (Staphylococcus aureus and Escherichia coli-स्टॅफिलोकोकस ऑरिअस् एवं एस्चेरिचिया कोलाई) नाशक शक्ति पाई गई है।

(४) इसकी अन्तर्छाल को जल में भिगोकर, मसलकर, छानकर पीने से मधुमेह में लाभ होता है।

अथ तूतः (सहतूत)। तस्य नामानि तत्पक्वापक्वफलगुणाँश्चाह

**तूतस्तूलश्च पूगश्च क्रमुको ब्रह्मदारु च। तूतं पक्वं गुरु स्वादु हिमं पित्तानिलापहम्॥
तदेवामं गुरु सरमम्लोष्णं रक्तपित्तकृत्॥ १००॥**

सहतूत के संस्कृत नाम—तूत, तूल, पूग, क्रमुक तथा ब्रह्मदारु ये सब हैं।

सहतूत के पके फल—स्वादिष्ट, गुरु, शीतल एवम्-पित्त तथा वात के नाशक होते हैं। यदि **कच्चे फल** हों तो वे-अम्ल रसयुक्त, उष्ण, पाक में गुरु एवम्-रक्तपित्त को उत्पन्न करने वाले होते हैं॥ १००॥

३८ तूत

हि०-सहतूत, तूत। शाहतूत। **बं०**-तूँत। **म०**-तूते। **गु०**-शेतूर। **ते०**-पुतिका। **ता०**-कम्बली। **फा०**-शाहतूत, तूततुर्श। **अ०**-तूत, तूद हामीज। **अं०**-Mulberry (मलबेरी)। **ले०**-*Morus indica Griff.* (मोरस् इण्डिका)। Fam. Moraceae (मोरेसी)।

तूत—आसाम, बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश आदि प्रान्तों में उत्पन्न होता है तथा बागों में लगाया भी जाता है।

इसका वृक्ष-मध्यमाकार का होता है। पत्ते-२ से ५ इञ्च लम्बे, २-३ इञ्च चौड़े, अंडाकार, अञ्जीर के पत्तों के समान कटे हुए होते हैं। फूल-मंजरियों में आते हैं।

तूत की दो-तीन जातियां होती हैं जिनके पत्ते आदि एक समान होते हैं। इसके पत्ते को रेशम के कीड़े बड़े चाव से खाते हैं। इसलिए रेशम के कीड़े पालने वाले प्रायः इसका वृक्ष रोपण कर रखते हैं।

इनमें से एक के फल पीताभ श्वेत एवं मीठे तथा दूसरे के मधुराम्ल एवं रक्ताभ कृष्ण होते हैं। वन्य तथा ग्राम्य भेद से भी इसके भेद होते हैं।

इसकी एक जाति मो० लिविगेटा (M. laevigata Wall.) सिक्किम की तराई में प्रायः वन्य अवस्था में मिलती है जिसका नेपाली नाम किमू या किम्बू होता है। तूत के पर्याय में क्रमुक आया है और क्रमुक से लोग पूग (सुपाड़ी) का ग्रहण करते हैं किन्तु चरकोक्त चार त्वगासव-योनि वृक्षों में क्रमुक के स्थान पर पूग का ग्रहण उचित नहीं जान पड़ता। वहां तो क्रमुक से कोई ऐसी छाल अभिप्रेत है जिसमें अन्य द्रव्यों के समान रेचन गुण हो। इन आधारों पर श्री ठा० बलवन्तसिंहजी ने चरकोक्त त्वगासवयोनि वृक्षों में के क्रमुक को पूग न मानकर इस तूद के भेद को माना है। (बिहार की वनस्पतियां, पृष्ठ १२३)।

गुण और प्रयोग—इसका रस दाहशामक, पिपासाहर एवं कुछ कफघ्न है। इसका ज्वर में प्रयोग करते हैं। इसकी छाल कृमिघ्न तथा विरेचक होती है। इसके पत्तों के क्वाथ से स्वरभंग में गण्डूष कराते हैं। इसकी जड़ कृमिघ्न तथा ग्राही होती है।

मात्रा—त्वक्क्वाथ ५ से १० तोला; फलस्वरस २ से ५ तोला।

अथ दाडिमः (अनार)। तस्य नामानि तत्फलभेदाँश्चाह

दाडिमः करको दन्तबीजो लोहितपुष्पकः। तत्फलं त्रिविधं स्वादु स्वाद्वम्लं केवलाम्लकम् ॥

अनार के संस्कृत नाम—दाडिम, करक, दन्तबीज तथा लोहितपुष्पक ये सब हैं।

फल के भेद—अनार के फल स्वाद में तीन प्रकार के होते हैं। (१) कोई मधुर रसयुक्त, (२) कोई मधुर तथा अम्ल रसयुक्त (३) और कोई केवल अम्ल ही होते हैं ॥ १०१ ॥

अथ तत्फलभेदानां गुणानाह

तत्तु स्वादु त्रिदोषघ्नं तृड्दाहज्वरनाशनम्। हृत्कण्ठमुखगन्धघ्नं तर्पणं शुक्रलं लघु ॥ १०२ ॥
कषायानुरसं ग्राहि स्निग्धं मेधाबलावहम् ॥ १०३ ॥
स्वाद्वम्लं दीपनं रुच्यं किञ्चित्पित्तकरं लघु। अम्लन्तु पित्तजनकमामं वातकफापहम् ॥१०४॥

मीठे अनार—आरम्भ में मीठे अन्त में कसैले, सन्तर्पण करने वाले, शुक्रजनक, लघु, ग्राही, स्निग्ध, मेधा तथा बलवर्धक एवम्—त्रिदोष, तृषा, दाह, ज्वर, हृदय तथा कण्ठ-सम्बन्धी रोग, और मुख के दुर्गन्ध को दूर करने वाले होते हैं।

कुछ मीठे कुछ खट्टे अनार—अग्निदीपक, रुचिजनक, लघु तथा किंचित् पित्तकारक होते हैं। **खट्टे अनार**—अम्ल रसयुक्त, पित्तजनक एवम्—आम, वात तथा कफ के नाशक होते हैं ॥

३९ अनार

हि०—अनार, दाड़िम। **बं०**—दाड़िम, डालिम गाछ। **म०**—डाळिम्ब। **गु०**—दाड़म। **क०**—दालिम्ब। **ते०**—दालिम्बकाया। **ता०**—मादलै, मडलै, मडलम। **अं०**—Pomegranate (पोमेग्रेनेट्)। **ले०**—*Punica granatum Linn.* (प्युनिका ग्रेनेटम्)। Fam. Punicaceae (प्युनिकेसी)।

प्रायः सब प्रान्त की वाटिकाओं में अनार के वृक्ष लगाये जाते हैं। यह हिमालय में ३ से ६ हजार फीट तक तथा अफगानिस्तान एवं फारस में वन्य रूप में पाया जाता है। इसका वृक्ष छोटा अनेक शाखा प्रशाखा करके झाड़दार होता है। पत्ते—विपरीत या न्यूनाधिक विपरीत या समूहबद्ध, अत्यन्त सूक्ष्म पारभासक छींटों से युक्त, १–२॥ इञ्च लम्बे, आयताकार या अभिलट्वाकार, चिकने एवं आधार की तरफ छोटे वृन्त से युक्त रहते हैं। फूल—अत्यन्त लाल रङ्ग के होते हैं। फल—गोल और छिलका मोटा होता है। फलों में सफेदीयुक्त लाल अथवा गुलाबी रङ्ग के अगणित